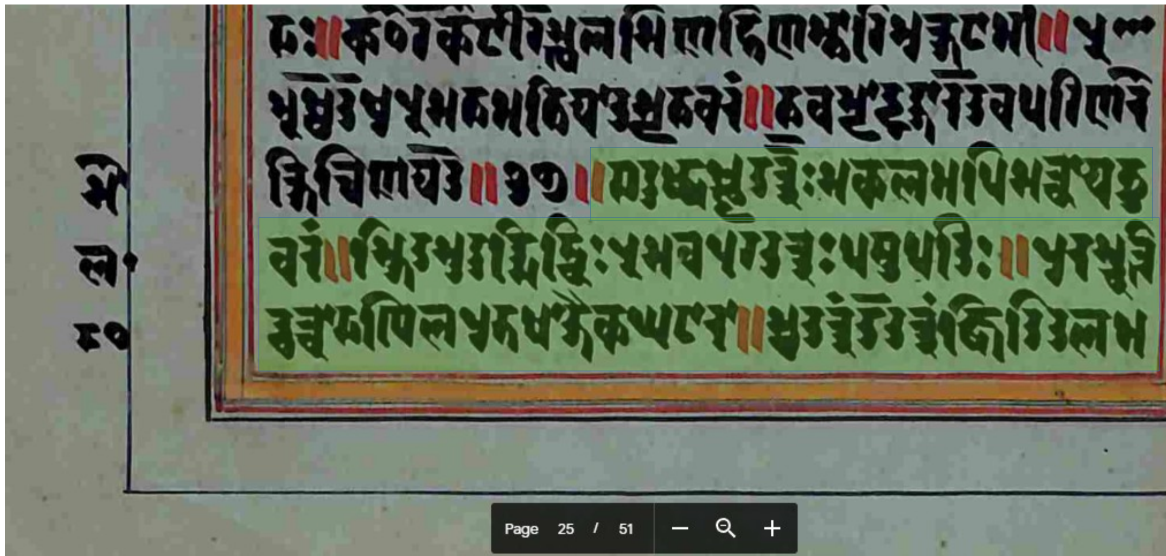
5 June_baramulla 222.pdf **Title : Saundarya Lahari**



चतुष्षष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसंधाय भुवनं
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः ।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना-
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम् ॥ ३१ ॥

Ref : https://sanskritdocuments.org/doc_devii/saundaryalahari.pdf

ॐ नमः शारदायै ॥ ॐ नमः श्रीगणपतये ॥ श्लोकः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] इति श्री [illegible] ॥ शुभं

[illegible]कुमानजी अव

३ति॰ मीकैर्द॰ मिवसुवडि ति॰ पञ्चति॰प॰ ॥ प्रतिवाकिम्न॥
भ्रूडवतिरषप्रलयरुडिति॰ ॥ र्यञ्चद्दुरिंमड्डभ्रफलकल॥
म्हिवलय॥ ग्रिपरि॰ मचेंडवकवूरके॰ प्रिंवरि॰ड॰ ॥ ००
रुमीयंभिफदंडदिरगिरिकर्द्दुलयिरे॥ कवीम्म्कूलदेरक
बभीपविरिग्रिरहूडय॰ ॥ वफलेद्दाम्रद्दूफभालनरयोडे
भरभ॥ उपविद्रुषूष्रभापिगिरिमधूरुहपफवीभी॥ ०३

श्री ल. ३२

रंवदीयं अंत्यपरविरामं तद्भुलन्दं ॥ उत्पक्ष्लेके पत्रिम
त्पवत्रिंशत्तमः ॥ गलङि श्री अश्रुः क्रमक्लमविश्वभुमि
मघ ॥ दलं दृढक्रुडि विगलित फलुलयवत्यः ॥ ०३ ॥ हि
ईषद्रुद्रुमद्रुमभणिकपद्मदत्तके ॥ फिविडिषड्मिमद्र
रभिमनउष्णहिगिरिये ॥ मत्रापभुधमत्रपरिग्वप्रदभु
लपगाभी ॥ ०४ ॥ मरल्लिद्रुमइंसमसियत्रलणल्पभुक्रं ॥

दशोदिशपृथ्वीग्रपदिकपङ्कमरलि।

ि भृते || कषट्कांह्नुभृभुव भिक्षकर्मे प्रसादिदेभा || १२ ||
छद्मखेत्रिंप्रगल्भायितः कच्छूवती || उपनीयपत्रैर्म
पिकमलरलामियमियभा || धतः स्रुतकलगुरुवहल
ग्धुलमालिर || म~ लीलालिंकवह्नियपठेद
लडिक || ६१ || गलेपभिर्भृगाउगमकणीर्ककलि~
ल || विवदृढदृष्टारुद्रुशिगु~ पु~ महृपुक्षिवः || विरल

क ८

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

–मां ॥ महादेवीरिमाः पूमधपडयमंत्रिवडे ॥ २३ ॥ मग
भट्टःमुक्तीरमडलदगीः क्रैमलदगीः ॥ पिवहुःमचलि
मुव–मधकहूमविरलभा ॥ ममकुरक्ष–पमालिडमि
रमःकुरलगलि ॥ र–क्रीभूरेः पाडवमरभूमहुडवडे ॥
२७ ॥ प्रभैरभवंमधुदिशिगिशिवंमदुलपरि ॥ दवीयेरै
दीयःरलडवलममकभूमिडभा ॥ वदवडमकः मिमि

८

[illegible]

रमउलदगीदययरमयः॥ पिवत्रिमुखकंत्रिमित्रिमिहृ।
मंकञ्चिकणिय॥ म्रविमुत्रेपद्द्नु॰॰ग॰॰कमभृतरल।
मृ॥ लपयधमुयउवलरतिलिक्लयउभ॥ वलयृ
भीरयः मदुविकेमनमनस्मुकविभयी॥ भगमुद्र्भउपा
ति॰॰भाउभ॰॰त्रवपव॥ ७३॥ गे॰॰लिकुमिट्टत्रपलउ।
मिम्मृःकवतिवि॥ विविस्त्रीमृपम्मःमिमिमिमिकड

मी. लं. ५

गवल ॥ विलिहु त्रै भउ भुवव वरउ भुलमकल : ॥ ६ ॥
विपञ्जू गायत्री वि विवि मव पं पमुपउ ॥ भुयाव्व वञ्ञ पालि
उमिरमे भ श्व मरे ॥ सुदी वैद ग्वे रे पल पिउउत्री कला
बं ॥ गिरिंवी ॰ वा ॰ गिम्रिलयाउ विलि रचिहुम ॥ ५ ॥
कागु ॰ भुअं उद्दि रगिगि ॰ वञ्ज लउय ॥ गिमी सर्वे पभुं
भहुरगण पश्ञ्जलउय ॥ कागुरुं पभि: आपमउमुडुंगि

केिए

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ता विलसति निकीरी वलाताञी || ३१ || अभ्यालङ्कृ विष्णु आ
लभकारिका मिकं || ठलितं अङ्गुष्ठं किमपि मदं अपमवा
भा || यत्नलपद्मनमगुल्फ विहुपरि ति || रत्नपवेठिष
न्तु अपिलमहः पपडव || ३२ || उवस्मणिमुवेदुपवदम
णिमुपारिउं || उभौ विभ्रं वउंलेवारिमदजीतुं नमपमा ||
यत्नलेके लिकमदउमदतिंणकलिलें || नपमूदर्शि

मे
ल.
१३

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

ਰਗ॥ ਮਃ੩॥ ਵਡਤ੍ਰੀ ਭਿਤ੍ਰੁੰ ਪੂਵਲਕੁਵੀਕਾ ਤਿਸਿ॥ ਹਿੰ
ਧੰਕੈ ਵਧੀ ਕ੍ਰਤ ਮਿਵਰਵੀਸ਼ੁਕਿ ਆਮਾ॥ ਤੈਤੁ ਦ੍ਰਿਮੰਰ ਭੁਵ
ਵਮਰਮਿ ਛਦਲ ਦਗੀ॥ ਪਗੀਵਡਮੇਤ: ਮਾਲਿ ਵਿਵਮੀ ਮਤ੍ਰ ਮੁ
ਗਲਿ॥੨॥ ਮਃ੩॥ ਮ੍ਰਲੈ: ਮੁਕਹੁ ਦਲਿਕ੍ਰਲਦ ਮਸ਼ੀ ਕਿਲਕੈ
ਪਗੀਤੇਵਕ੍ਰੰ ਪਾਰਿਦ ਮਤਿਪਕ੍ਰੈ ਰਦਾ ਰਮਿਭਾ॥ ਦਮਮ੍ਰੈ ਵੇਮਮਿ
ਛਮਰਮਾਮਿਕਿ ਫਲ ਕੁਮਿਰਿ॥ ਮਪਤ੍ਰੈ ਮਰੂਤ੍ਰਿ ਮਧ੍ਰਮ ਮਬਰਮਾ।

हृमपलिदः ॥ २२ ॥ ललहिलवहूंहुशिविमलभकशि
रवयश ॥ ड्रिशिपंःमत्रेभक्रुएमामिपिर्ङ्शूमकलभा ॥ वि
पदमहूमङकयमकिमभुयमाभिमः ॥ भुपलिपमु शिःप
शि॰ माशिकदिमकाः ॥ २४ ॥ हूविंठयाकिग्निकुवरढा
यक्षहूमशिशि ॥ हृस्रीयिरेइहूंमपकागमपिहूंपरगुल
ण२मदेमहेडाकागरुौडंरडिपडिः ॥ भूकिमेभमेमभूग

म. लं. २८

यां३त्रिगुरुऋगमिदभा ॥ २९ ॥ मृदःश्रु३मर्हं३वरयर ।
भक्कदकउय ॥ रिय भंव भं३मणा३रणरीवयकउय ॥
ऊडीय३दक्षिदयदलि३देमश्चुणकयिः ॥ भमणत्रुमत्रुं
दिवमतिमियिऋगमरीभा ॥ ३० ॥ विमलकल्हणीमृ
एकामिरयेहृऊवलये: ॥ रुपणपयकिमपिमप्रवै
गवा३क ॥ पवत्रीदक्षिप्रेवरुरगगविभुवविलयय ॥ पू

वेः३ुत्रभनूवदा॰पेष्टविलयवे ॥ ४३ ॥ कवीरंभग्रक
भुवकभकारतैककविं३ ॥ कव्जहृहैपठभारकलठैक
लयुगलभा ॥ प्रभक्तद्वैभद्भुरवारवभभुढ३रल ॥ व
भ्रयभंपक्रढलिकवयरोकिंभ्रिदम॰भा ॥ ४७ ॥ मि
वेमक्षवधूरढि३रभ्रविक्रभ्रूवपर ॥ भगैधगाक्षयं मिमि
मगिरोविभढयवजी ॥ दरादिहैकीरभरमिदरुभेंढद

लवी॥ भविष्यन्ति भवितव्य इति दक्षिः अकल ॥९॥
गति कलहलं नानक उव पक्षा लिङ्गणवी॥ धुरं तेषु श्रिउषा
मभाभविभूवल दलि॥ डमेरे ३वें इपरपाउ इलिउ अक॥
लिके॥ उव कलहभूमा म विलभं कलयउः ॥१०॥
विकक्षे बल्लुहू उकिकिउनील फूरउय॥ विकसिम्बुरे
रिउपभिकभीमपकधिउ॥ धरःमक्षुं में वर्षू हिन दामि

कृपाड ॥ नृता: अहंविह्र: भडाग्रंतु ॰ रं इयुभिव ॥ ॥
पविशीकुत्र: पनुपडिपरणीरहृदये ॥ दयामिरेईरक ॰
दवलसृभक्रामिढि: ॥ रद: मि ॰ णाङ्गउपरडरयेडिपूरमधं
इय ॰ ंडीऊरभूपरयामिअभ्रूदभरय्य ॥ २३ ॥ उवपले
कलेणपरयररैपुडूणाकिड ॥ विलीपडेउयोरियमा
निमिधम्नरुणिक: ॥ डयंमशीकडुसूदणुकेवपंडुकल

ये ॥ णाहडंभूखेविमिमखविषण्हूं पविमहि ॥ ५८ ॥
विमेधिढेवह्रं पलयभुढवेयरिणागडी ॥ रवेइढः भंतेः
ण भिवणणहूउरये ॥ हुडेधह्डंणागढिढममेधंरा
लयइः ॥ पाणिहुंमढेपाणिहुगयिमिध भुवढमः ॥ ५९ ॥
ढमद्दपीयस्मूखाढालिउरीलिंइलढवा ॥ ढवीघंभंतो
रंध्रपवढपयभभापिमिवे ॥ घरेरढंणवेकवाउरमेउद ॥

भि
ल॰
२१

सिरियर॥ वरेवदद्भूवभमकारिपर्तेदिमका:॥५८॥म
रलंउपलीयगालभगरणभूउरये रकेधभणेउकृथभम
रकेफ्ऌकृउकभा॥ जिस्त्रीरेयरमूव~पबभल्लसूविल
मत्रपह्नहृभद्देफिमजिमरमद्भूपणिध~भा॥५७॥ म्रु
रह्मऌकैगाधृजिद्वलाजिरएह्नपगलं॥ मनुस्त्रंह्नमहेउवम
णिभिटंमफघरघभा॥ यभफहृदृहृरवविरिघमरूहृमर

श्री ल ४०

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ऽभिवं श्रुत्वाभि रथराम ऽ यश्च पठेत् ॥ सर्वसिद्धिस्तु सर्वदा
मिरमं लभेत्कवचं ॥ त्रयु पठेत् ... यः पठेत् ॥ प
सुरभीमः स्तमदेवरकं केलितावे ॥ ३६ ॥ सर्वजन्तुगोरमु
लरमथ वैलकुराभितं ॥ ललिते कुरंगरा ऽ युगलेपकयति
त ॥ मिरपत्तुः सर्वं पदेरजावभदीलितवत ॥ ह्लं क्लें ह्रीं
क्लिं किलिकिलि तभीसंनिसिपऽ ॥ ३७ ॥ पदं तक ह्रीं स्पूपद

मै
लं
५५

मपढो विविधं ॥ कथं रीतं भस्मिङ्क णिकभणीकदातु ॥
लभा ॥ कथं वदम्भ्रहृभपयभरकलेधगढिम ॥ यढढपरु
भुरूषढिढयभरेरमरमा ॥ ३६ ॥ रावैडकभ्रीं कात्कमल ॥
भङ्कमभामिकि ॥ भृत्रु दिङ्गं रं दुभउङवैउमाङ्गिमलै ॥
दलविभुष्टुः क्विभलयकारवृं ढणउं ॥ ढशिङ्गृहिठरंदाप्रि
यमनिमभद्भयढढौ ॥ ३७ ॥ कढकलिभउङ्कषपकालि।

५०ले

रलङ्कारां पिवियं विहुक्षीरवमा॰ रिक्लिणरणलमा॥ २
दष्टयुकरें मपिढकविरक्ता॰ उय॥ यढढउवें॰ भीमापिक
मलरम्नुलामरभा॥ ७॰॥ पढ्ढ्युअग्नीरपमिमयभिवल
त्रुभरमः॥ मारत्रेभुपिलंढवाकलदंमपरणाढढि॥ मुविद्धा
पमिहृंभुढगामलिमल्लीरालिरभुलढमढुं॰ मा॰।
कमलं मरमाढिउ॥ ७॰॥ ढढवेढीरेहःमिचमारिममभ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मित्रकिरणैर्मुकुलितममलैः ॥ दधदिन्दुकलां शिशिरां ललितमपत्रि-
विकचं ॥ विरञ्चनमुकुलितमहत्पद्मपङ्कजमिव ॥३१॥ क-
लङ्कः कम्बुग्रीवा लतिकाभोगिभ्यां ललभय ॥ कलाधिः कण्ठे म-
रकतकाण्डं विविधितभा ॥ सुरभूषितामरविन्दधिमीलनि-
कृतदमा ॥ विनिकृतपङ्कजविविधार्थतरंडवदने ॥३२॥
मुनिदत्त्वा विकिरणैर्मुकुलितमहत्कलिकाभिः ॥ निभृतं विदधे

तिपतिकेरपितरैः ॥ सहदेवं द्विष्ठ उवसतिसतीरसम ।
म ॥ कुवहुभअर्कः ज्ञारकउगिरघ्रलकः ॥ ०·· ॥ गिर
सहदेवीस्तुद्धि गढद्धि भगभविडि ॥ दाः पञ्जीपञ्च
दाभहपवीमद्विउरयभो ॥ उगीयकपिञ्जुडणिगमविः
भीभमद्विम ॥ सहभयविक्षिंठभयभिपरंस्वङ्गभाढिखि
०·० ॥ भरवहलक्षु विणिदढिभपद्धे विदहवेँ ॥ गउःपः

ला. मे. २७

श्रितंमिथिलपतिंग्राम्सवधध॥ विंगीवत्रेवाढिपिः
पतुपमहृतिकाः॥ पंरुक्षिपुंभयतिह्मंस्तुलर
सभा॥ १०३॥ तिणतिहृम्र्रेत्रिरवाणितुल्लीतितिपल॥
तिरध्यरुक्षारित्रिवभपातिविकतिलय॥ तियहतिङ्के
तिपिलतितामिकमुतिपढं॥ तिरुक्षातिष्ठतितामयमम
तिमुतिमिमभी॥ १०२॥ पढीपहुलतितितिवभकसी

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मं. ल ३५

वं

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]